के लिए अपने देश की नीति निर्धारित करते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की प्रासंगिकता या महत्त्व

(RELEVANCE OR IMPORTANCE OF INTERNATIONAL POLITICS)

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एक विकासशील विषय है। इसे राष्ट्रों के मध्य गहन परिवर्तनशील तथा विकासशील सम्बन्धों के साथ गति बनाये रखना पड़ता है। संसार के परिवर्तित राजनीतिक सन्दर्भ में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन की प्रासंगिकता या महत्त्व को निम्न तर्कों के आधार पर समझा जा सकता है—

(1) **विश्व की ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियों का विश्लेषण** (Analysis of the Historical and Social circumstances of the World)—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विश्व की वर्तमान ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का विश्लेषण करती है एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का युक्तिपूर्ण समाधान खोजती है। इसके साथ-साथ यह भी भविष्यवाणी करने का प्रयास किया जाता है कि भविष्य में उनका स्वरूप किस प्रकार का होगा ?

(2) **विदेश नीति में बौद्धिक गुणों का समावेश** (Inclusion of Intellectual Attributes in the Foreign Policy)—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्त बुद्धि पर आधारित होते हैं। अतएव यह स्वाभाविक है कि जिस विदेश नीति को अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धान्तों पर आधारित किया जायेगा वह बौद्धिक गुणों से पूर्ण होगी। बौद्धिक आधार पर परीक्षण करके विदेश नीतियों को उचित ठहराया जाता है अथवा उनको अनुचित ठहराकर छोड़ दिया जाता है।

(3) **विश्व शान्ति में योगदान** (Contribution towards the World Peace)—विश्व शान्ति आज की आवश्यक आवश्यकता है। प्रो. चार्ल्स मार्टिन के अनुसार, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन की मुख्य समस्या दो विरोधी स्थितियों—विश्व शान्ति तथा युद्ध का एक साथ अध्ययन करना होता है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विश्व शान्ति की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहती है। अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का आधुनिक युग में विशेष महत्त्व है।

(4) **राजनीतिज्ञों के लिए महत्त्व** (Significance of the Politicians)—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की विचारधारा के सिद्धान्त राजनीतिज्ञों को वह ज्ञान प्रदान करते हैं, जिससे वे विदेश नीति से सम्बन्धित समस्याओं; जैसे—साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, अर्थव्यवस्था का भूमण्डलीकरण, नवीन अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था, निःशस्त्रीकरण आदि का समाधान करने में सहयोग देते हैं।

(5) **खतरों से बचाव** (Safeguard against the Dangers)—अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अनेक प्रकार के सिद्धान्त पाये जाते हैं। उनके अपने अलग-अलग गुण-दोष हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञान हो जाता है कि कौन-सा सिद्धान्त देश के हित में

Scanned with CamScanner

और कौन-सा अहित में है। इस ज्ञान के माध्यम से कोई भी राष्ट्र स्वयं को उन सम्भावित खतरों से बचा सकता है जो गलत सिद्धान्तों का अनुसरण करने के कारण राष्ट्रों के समक्ष उपस्थित हो सकते हैं।

(6) **विश्व सरकार—एक उद्देश्य** (World Government—A Goal)—बर्ट्रेण्ड रसेल के मतानुसार विश्व सरकार के द्वारा ही विश्व शान्ति की स्थापना की जा सकती है। सम्प्रभुता और उग्र राष्ट्रीयता की धारणाएँ विश्व सरकार के मार्ग की प्रबल बाधाएँ हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के माध्यम से राज्यों के मध्य विश्व सरकार की पृष्ठभूमि तैयार की जाती है।

(7) **लोकतन्त्रात्मक** (Democratic)—वर्तमान युग लोकतन्त्र का युग है। इस युग में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति बहुमत पर आधारित है। लोकतान्त्रिक प्रणाली से ही विश्व की समस्याओं को हल करने का प्रयास किया जाता है। लोकतन्त्रीय शासन प्रणाली के युग में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का विशेष महत्त्व है।

(8) **शक्ति संघर्ष की राजनीति का अध्ययन** (Study of the Politics of Struggle for Power)—**मॉर्गेन्थो** के शब्दों में, "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति सभी राजनीतिक उद्देश्यों की भाँति शक्ति के लिए संघर्ष है।" प्रारम्भ में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का उद्देश्य युद्ध और युद्ध को समाप्त करना था परन्तु वर्तमान में आधुनिक प्रवृत्ति अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार को शक्ति के आधार पर समझने की है। आज प्रत्येक राष्ट्र शक्ति प्राप्त करने, शक्ति की वृद्धि करने और उसका प्रदर्शन करने में विश्वास करने लगा है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति इस स्थिति को समझने और इसके सन्दर्भ में विश्व की समस्याओं को हल करने के लिए उपाय बताता है।

(9) **तनाव का सक्रिय विरोध करने के लिए** (For the Active Resistance to Tension)—आधुनिक युग में अणु शक्ति का पर्याप्त विकास हुआ है। अणु शक्ति के प्रयोग से जहाँ विश्व में ऊर्जा का विकास हुआ है वहाँ अणु शक्ति से विनाशकारी हथियारों का भी विकास हुआ है। विश्व में तनाव में बहुत वृद्धि हुई है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का आधुनिक युग में विशेष महत्त्व बढ़ गया है, क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धान्तों के द्वारा ही एक ऐसा वातावरण का निर्माण सम्भव है जो विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय तनाव का सक्रिय विरोध करके विश्व शान्ति की रक्षा कर सके।

इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की प्रासंगिकता आज के युग में पहले से भी अधिक है और दिनोंदिन होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक गतिविधियों ने इसके महत्त्व को और बढ़ा दिया है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन इसलिए भी उपयोगी है, क्योंकि इससे यह ज्ञात होता है कि निश्चित परिस्थितियों में व्यक्ति और राष्ट्र किस प्रकार से आचरण करते हैं और अपने हितों को सुरक्षित रखते हैं।

नाम विभेद (Terminological Distinction)

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के लिए अनेक नाम दिये जाते हैं: जैसे—विश्व राजनीति, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, अन्तर्राष्ट्रीय मामले, विदेश नीति, विश्व के मामले। परन्तु इनमें से कोई

Scanned with CamScanner

राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सम्बन्ध (Relations between National and International Politics)

जिस प्रकार किसी राष्ट्र के अन्दर हित-साधन के लिए विभिन्न वर्गों द्वारा किये गये पारस्परिक संघर्ष का अध्ययन राजनीति कहलाता है, उसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विभिन्न राष्ट्रों द्वारा अपने हित-साधन के लिए किये गये संघर्ष का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति कहलाता है। राष्ट्रीय राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के मध्य सम्बन्ध निम्न प्रकार देखा जा सकता है—

(1) **अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय समस्याओं में सामंजस्य** (Conciliation between International and National Problems)—राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं में बहुत कुछ सीमा तक सामंजस्य पाया जाता है। राष्ट्रीय सुरक्षा से सम्बन्धित नीति का निर्माण अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को ध्यान में रखकर किया जाता है। राष्ट्रीय नीति पर अन्तर्राष्ट्रीय नीति का विशेष प्रभाव पड़ता है। आज कोई भी देश अकेला रहकर अपना काम नहीं चला सकता है। प्रत्येक देश को दूसरे देशों से किसी न किसी क्षेत्र में सहयोग करना पड़ता है। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीयता राष्ट्रीयता को प्रभावित करती है।

(2) **राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र का परस्पर अतिराव** (Mutual Overlaping of National and International Jurisdiction)—राष्ट्रीय महत्त्व की अनेक परिस्थितियाँ अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की परिस्थितियाँ बन सकती हैं; जैसे—राष्ट्रीय नीति में आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रभावित करता है। इसी प्रकार कभी-कभी गृह-युद्ध जो राष्ट्रीय राजनीति के भाग होते हैं, कभी-कभी अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व के बन जाते हैं। इसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध या विश्व मन्दी या अन्तर्राष्ट्रीय जनमत राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित कर देते हैं।

(3) **अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की भाषा का राष्ट्रीय स्तर पर जन्म** (Birth of the Language of International Politics on National Basis)—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में जो भाषा प्रयोग की जाती है वह किसी न किसी राष्ट्र के हितों पर आधारित होती है। इससे भी यह सिद्ध होता है कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक सम्बन्ध आपस में घनिष्ठ होते हैं।

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अन्तर (Difference between National and International Politics)

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अन्तर निम्नलिखित हैं—

(1) **साधनों के आधार पर** (On the Basis of Means)—जहाँ राष्ट्रीय राजनीति में हिंसा, धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार जैसे साधनों को प्रयोग करने की मनाही होती है, वहाँ अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में ये सभी साधन उचित माने जाते हैं और सैनिक आवश्यकता के आधार पर युद्ध भी उचित माने जाते हैं।

(2) **साध्यों के आधार पर** (On the Basis of Ends)—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का उद्देश्य उसकी राजनीतिक इकाइयों (राज्यों) को स्थायी रूप से बनाये रखना है। इनके जीवन

Scanned with CamScanner

को अधिक खतरा रहता है क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में बाध्यकारी सत्ता का अभाव रहता है जबकि राष्ट्रीय राजनीति का उद्देश्य समुदायों की सुरक्षा को इस प्रकार का खतरा नहीं रहता है क्योंकि राज्य में बाध्यकारी सत्ता होती है।

(3) **सांस्कृतिक आधार पर** (On the Cultural Basis)—प्रत्येक राष्ट्र की अपनी संस्कृति तथा रीति-रिवाज होते हैं जिनके आधार पर प्रत्येक राष्ट्र की राष्ट्रीय नीति का निर्माण होता है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का सम्बन्ध किसी स्थान-विशेष की संस्कृति न होकर सम्पूर्ण राष्ट्रों की संस्कृतियों के योग से सम्बन्धित है।

(4) **योग्यता के आधार पर** (On the Basis of Qualification)—राष्ट्रीय राजनीति के विद्वान अपने राष्ट्र की परम्पराओं के ज्ञान के कारण राष्ट्रीय नीति के निर्धारण करने में पारंगत हो सकते हैं तथा सफलता प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भी उतने ही पारंगत और योग्य सिद्ध हों; उदाहरण के लिए, सद्दाम हुसैन इराक में बहुत प्रसिद्ध राष्ट्रपति सिद्ध हुए, लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इराक द्वारा कुवैत पर आक्रमण करने के कारण इतने प्रतिबन्ध संयुक्त राष्ट्रसंघ ने लगा दिये कि इराक की जनता को आवश्यक सामग्री मिलना भी कठिन हो गया, दूसरी ओर पं. जवाहर लाल नेहरू अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के प्रसिद्ध नेता रहे, परन्तु चीन से विदेश नीति में असफल रहे, जिसके कारण भारत पर चीन ने 1962 में आक्रमण कर बहुत भाग दबा लिया।

(5) **प्रयोग के आधार पर** (On the Basis of Experiments)—राष्ट्रीय राजनीति में प्रयोग किये जाने वाले सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रयोग नहीं किये जा सकते क्योंकि राष्ट्रीय हितों के आधार पर निहित राष्ट्रीय राजनीति अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बाधक सिद्ध होगी। राष्ट्रीय हित निश्चित रूप से अन्तर्राष्ट्रीय हित नहीं बन सकते। इन्हीं कारणों से राष्ट्रों के मध्य तनाव उत्पन्न होता है।

(6) **समस्याओं के आधार पर** (On the Basis of Problems)—समस्याएँ तो प्रत्येक देश में पायी जाती हैं। परन्तु एक देश की समस्याएँ दूसरे देश की समस्याओं से भिन्न प्रकार की होती हैं। राष्ट्रीय समस्याओं से केवल राष्ट्र ही प्रभावित होता है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं से सारा विश्व ही प्रभावित होता है।

(7) **नियमों के आधार पर** (On the Basis of Rules)—राष्ट्रीय राज्य सम्प्रभु राज्य होता है इसलिए उसके नियम अधिक पालन होते हैं जबकि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सम्प्रभुता का अभाव पाया जाता है इसलिए उसके नियमों को मानना या न मानना राष्ट्रों की अपनी इच्छा पर निर्भर होता है।

(8) **मॉर्गेन्थो** के अनुसार (According to Morgenthau), मॉर्गेन्थो ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में निम्न अन्तर बताये हैं—

(i) राष्ट्रीय राजनीति की इकाइयाँ राजनीतिक दल होते हैं, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की इकाइयाँ राज्य होते हैं।

(ii) दोनों के कानून अलग-अलग होते हैं। राष्ट्रीय राजनीति का आधार राष्ट्रीय कानून होता है जो अन्तर्राष्ट्रीय कानून की अपेक्षा आसानी से लागू किये जा सकते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का आधार अन्तर्राष्ट्रीय कानून होता है।

Scanned with CamScanner

(iii) राज्यों के आन्तरिक क्षेत्र में शक्तिशाली सरकार का अस्तित्व है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में ऐसी कोई कारगर सत्ता नहीं है।

(iv) राष्ट्रीय कानून का निर्माण करने वाली संस्थाएँ तथा उनके अधिकार तथा सीमाएँ स्पष्ट हैं। अन्तर्राष्ट्रीय कानून का निर्माण इस प्रकार नहीं होता है।

(v) राष्ट्र के अन्दर विभिन्न दलों में सत्ता पाने की होड़ रहती है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विभिन्न राज्यों में शीत युद्ध भी चलता रहता है और कई बार यह सशस्त्र संघर्ष का रूप भी धारण कर लेता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के उद्देश्य, साधन, इनमें भाग लेने वाली इकाइयाँ भिन्न-भिन्न होती हैं फिर भी यह सत्य है कि राष्ट्रीय राजनीति अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित भी करती है और उससे प्रभावित होती भी है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध में सम्बन्ध (Relation between International Politics and International Relations)

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन का प्रारम्भ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन के साथ होता है। इसलिए कभी-कभी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध का प्रयोग एक ही अर्थ में कर लिया जाता है। **मॉर्गेन्थो** ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को पर्यायवाची माना है। मॉर्गेन्थो ने अपने मत के समर्थन में निम्नलिखित तर्क दिये हैं—

(i) अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का केन्द्र है।

(ii) अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का मूलाधार है।

(iii) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन में परम्परागत रूप से प्रयुक्त किया जा रहा दृष्टिकोण अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का भी अध्ययन करता है।

(iv) वर्तमान समय में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध परस्पर निकट आते जा रहे हैं। इसका आधार शान्ति की प्राप्ति है।

(v) **केनिथ थाम्पसन** ने कहा है कि, "अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का मर्म और मूल तत्त्व अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति है।"

(vi) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा विभिन्न देशों द्वारा शक्ति प्राप्त करने के लिए की जाने वाली प्रतिस्पर्धाओं का तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अनुशीलन किया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में अन्तर (Difference between International Politics and International Relations)

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध समानार्थी नहीं हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में राष्ट्रों के आपसी सम्बन्धों के सभी पहलुओं—राजनीतिक, गैर-राजनीतिक, आर्थिक, भौगोलिक, सरकारी-गैर-सरकारी, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक, तकनीकी, वैज्ञानिक, सामरिक और शान्तिपूर्ण, पर विचार किया जाता है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में राष्ट्रों के केवल राजनीतिक सम्बन्धों का ही अध्ययन किया जाता है। दोनों में अन्तर अग्रलिखित हैं—

Scanned with CamScanner

(1) **क्षेत्र के आधार पर** (On the Basis of Scope)—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का क्षेत्र सीमित है। इसमें केवल राज्यों के मध्य केवल उन्हीं सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है जिनसे राष्ट्रीय शक्ति और राष्ट्रीय हित जुड़े होते हैं, जबकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का क्षेत्र बहुत विस्तृत होता है। इसमें राज्यों तथा व्यक्तियों के मध्य स्थापित होने वाले राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक, नैतिक सम्बन्धों के अध्ययन के साथ-साथ विभिन्न संस्थाओं के मध्य के सम्बन्धों का भी अध्ययन किया जाता है।

(2) **प्रयोग के आधार पर** (On the Basis of Use)—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति शब्द का प्रयोग संकुचित अर्थ में किया जाता है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध शब्द अपने आप में व्यापकता लिये हुए है।

(3) **विषय-सामग्री के आधार पर** (On the Basis of Subject-matter)—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की तुलना में सीमित होता है। इसके अन्तर्गत केवल राज्यों के मध्य शक्ति के सम्बन्ध व उसके द्वारा समस्याओं के निदान की बात आती है। जब तक यह संघर्ष बना रहता है तभी तक यह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का विषय है जैसे ही संघर्ष या समस्या समाप्त हो जाती है, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की सीमा भी समाप्त हो जाती है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन की कोई निश्चित सीमा नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अन्तर्गत समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास, भूगोल, अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, कूटनीति का अध्ययन सम्मिलित रहता है।

(4) **अध्ययन का स्वरूप** (Nature of Study)—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन सैद्धान्तिक होता है। जबकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन घटना-प्रधान, व्यावहारिक तथा ऐतिहासिक होता है।

(5) **अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार** (International Behaviour)—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार को समझने का प्रयास किया जाता है तथा सिद्धान्त की खोज पर बल दिया जाता है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार को समझने जैसी कोई बात नहीं होती है।

(6) **अध्ययन** (Study)—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में राज्यों के अथवा स्वतन्त्र राजनीतिक समुदायों के अपने-अपने एवं पारस्परिक संघर्ष के कारण पैदा होने वाली क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं तथा सम्बन्धों का अध्ययन भी किया जाता है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में जनता, सरकार तथा राष्ट्र, आदि समुदायों के साथ-साथ धार्मिक व आर्थिक समुदायों का भी अध्ययन किया जाता है।

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का क्षेत्र संकुचित है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध का क्षेत्र बहुत व्यापक है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में केवल विभिन्न देशों की राजनीति, कूटनीति का अध्ययन किया जाता है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध में देशों के मध्य समस्त मानवीय सम्बन्ध आ जाते हैं। **पामर और पर्किन्स** के शब्दों में, "अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एक विस्तृत शब्द है अपेक्षाकृत अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के।"[1]

---

1 "The International Relations is a broader term than International Politics."
—*Palmer and Perkins*

Scanned with CamScanner

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. "राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष है।" ये शब्द किसके हैं ?
   - (A) मॉर्गेन्थो
   - (B) क्विन्सी राइट
   - (C) स्प्राउट
   - (D) थॉम्पसन।
2. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति किसको कहते हैं ?
   - (A) राष्ट्रों के मध्य
   - (B) राज्यों के मध्य
   - (C) समाज के मध्य
   - (D) व्यक्तियों के मध्य।
3. 'अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का सम्बन्ध मुख्य रूप से राज्य प्रणाली से है।' यह किसका कथन है ?
   - (A) हार्टमैन
   - (B) लिंकन
   - (C) पामर एण्ड पर्किन्स
   - (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Scanned with CamScanner

4. आधुनिक काल में युद्ध की परम्परा में किस युद्ध ने नया अध्याय जोड़ा है ?

(A) शीतयुद्ध

(B) गर्मयुद्ध

(C) राजनीतिक युद्ध

(D) नैतिक युद्ध ।

5. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति किसकी पृथक् शाखा है ?

(A) ज्ञान

(B) शक्ति

(C) धर्म

(D) राष्ट्र ।

6. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक सम्बन्धों में पायी जाती है—

(A) एकता

(B) नैतिकता

(C) घनिष्ठता

(D) सार्वभौमिकता ।

7. आधुनिक युग में किसके विकास होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का विशेष महत्त्व बढ़ गया है ?

(A) परमाणु शक्ति

(B) अणु शक्ति

(C) रासायनिक शक्ति

(D) उपर्युक्त सभी ।

8. "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति ऐसा क्षेत्र है जिसमें विज्ञान का प्रवेश कठिन है ।" यह कथन किसका है ?

(A) बर्टन सापिन

(B) क्विन्सी राइट

(C) मॉर्गेन्थो

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं ।

9. "राष्ट्रीय हित ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को समझने की कुंजी है ।" यह कथन किसका है ?

(A) मॉर्गेन्थो

(B) न्यूमैन

(C) क्विन्सी राइट

(D) लासवेल ।

10. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का केन्द्र-बिन्दु है—

(A) संघर्ष

(B) राष्ट्रीय हित

(C) शक्ति

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं ।

[उत्तर—1. (A), 2. (A), 3. (C), 4. (A), 5. (A), 6. (C), 7. (B), 8. (B), 9. (A), 10. (B) ।]

Scanned with CamScanner

है ?

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की एक परिभाषा लिखिए।
2. राजनीति की मॉर्गेन्थो के शब्दों में परिभाषा लिखिए।
3. पामर पर्किन्स के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की परिभाषा दीजिए।
4. "समस्त राजनीति स्वभावतः शक्ति और संघर्ष से सम्बन्धित है।" यह परिभाषा किस विचारक की है ?
5. "राष्ट्रों के मध्य शक्ति के लिए संघर्ष तथा उसका प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति कहलाता है।" यह परिभाषा किस विचारक ने दी है ?
6. "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन वास्तव में विदेश नीतियों के अध्ययन के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।" यह परिभाषा किस विचारक ने दी है ?
7. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की विषय-वस्तु के दो तत्त्व बताइए।
8. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में आर्थिक संगठनों के दो नाम बताइए।
9. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सैनिक संगठनों के दो नाम बताइए।
10. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में राजनीतिक संगठनों के दो नाम बताइए।
11. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रादेशिक संगठनों के दो नाम बताइए।
12. यू. एन. ओ. के दो अंगों के नाम बताइए।
13. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की प्रासंगिकता के दो तत्त्व बताइए।
14. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में दो अन्तर बताइए।
15. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विज्ञान नहीं है। इसके समर्थन में दो तर्क दीजिए।

[उत्तर—

1. "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति राजसत्ताओं के बदलते सम्बन्धों के सन्दर्भ में राज्यों की नीतियों की अन्तःक्रिया है।" —पैडलफोर्ड तथा लिंकन

Scanned with CamScanner

2. "राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष है।" —मॉर्गेन्थो

3. "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का सम्बन्ध मुख्य रूप से राज्य प्रणाली से है।" —पामर एवं पर्किन्स

4. जॉर्ज कैटलिन।

5. मॉर्गेन्थो।

6. फैलिक्स ग्रॉस।

7. (A) राज्य का अध्ययन,
   (B) शक्ति का अध्ययन।

8. (A) यूरोपियन साझा बाजार,
   (B) विश्व व्यापार संगठन।

9. (A) नाटो (NATO),
   (B) सीटो (SEATO)।

10. (A) राष्ट्रसंघ,
    (B) संयुक्त राष्ट्रसंघ,

11. (A) सार्क (SAARC),
    (B) आसियान (ASEAN)।

12. (A) अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (I. L. O.),
    (B) विश्व स्वास्थ्य संगठन (W. H. O.)।

13. (A) विश्व शान्ति में योगदान,
    (B) विश्व सरकार—एक उद्देश्य।

14. (A) साधनों के आधार पर,
    (B) सांस्कृतिक आधार पर।

15. (A) घटनाओं की अस्थिरता,
    (B) वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग असम्भव।]

Scanned with CamScanner